Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VII, Issue No. XIV, April-2014, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति का उनका शैक्षिक निष्पादन के सम्बन्ध में अध्ययन''

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VII, Issue No. XIV, April-2014, ISSN 2230-7540

"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति का उनका शैक्षिक निष्पादन के सम्बन्ध में अध्ययन"

Chanchal Sharma[1] Dr. Sandhya Kumari Singh[2]

[1]Research Scholar, Singhania University, Rajasthan

[2]Lecturer, B.S.A College, Mathura

----------X----------

प्रस्तावना :

"विद्यालय वह स्थान होना चाहिए जहाँ विद्यार्थी अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने में न डरे, जहाँ बिना घबराहट के भूल की जा सके? जहाँ आँसू और विध्न अपमानित न हों, जहाँ प्रोत्साहन और सहानुभूति आवष्यकतानुसार दी जाये, जहाँ हास्य एवं व्यंग के साथ भी षिक्षण कार्य हो एवं विद्यार्थी उत्साहपूर्वक मानवीय समझबूझ के प्रति आष्वस्त हो।"[1]

घर के बाद स्कूल और कॉलेज व्यक्ति के स्वयं के बारे में सोचने के मुख्य निर्धारक है। स्कूल बच्चे के व्यक्तित्व निर्धारण की एक अच्छी भूमिका निभाता है। माता–पिता के बाद किसी दूसरे की अपेक्षा अध्यापक बच्चे के व्यक्तित्व के विकास पर अधिक प्रभाव डालता है। स्कूल का प्रभाव प्रारम्भिक जीवन में ही आ जाता है। यह विद्यार्थियों को जीवन में आगे बढ़ने का वास्तविक अवसर प्रदान करता है।

बच्चे का विद्यालय जाना ही इस बात का प्रतीक है कि वह विद्यालय से भयभीत नहीं है तथा कक्षा में आनन्द की अनुभूति होती है अर्थात वह विद्यार्थी बनकर आगे बढ रहा है।

परिवार इस अनूकुल अभिवृत्ति पर विष्वास करने में सहायता प्रदान करता है। विद्यार्थी का विद्यालय में आसानी से समायोजन हो जाता है। घर पर माता–पिता परिवार के किसी दूसरे सदस्य की अपेक्षा बच्चे की स्कूल के प्रति अभिवृत्ति पर अधिक प्रभाव डालते है। यह पाया जाता है कि यदि विद्यार्थी की स्कूल के प्रति अनुकूल अभिवृत्ति है तो विद्यार्थी अपनी क्षमता के साथ कार्य करता है, अपने स्कूल के अनुभवों से आनन्दित होता है और अपने अध्यापकों तथा साथियों से सहानुभूतिपूर्वक मित्रवत् सम्बन्ध बना लेता है। लेकिन इसके अभाव में वह प्रायः कम क्षमता से कार्य करता, तथा वह अपने साथियों से मित्रता स्थापित नहीं कर पाता, उसे स्कूल से षिकायत रहती है तथा वह उसकी आलोचना करता रहता है। कभी–कभी उसमें इतना डर विकसित हो जाता है कि वह स्कूल जाना भी बन्द कर देता है। विद्यार्थी की स्कूल और कॉलेज के प्रति प्रतिकूल अभिवृत्ति होने पर वह प्रायः भगोड़ा हो जाता है या परीक्षा छोड देता है या वह निम्न निष्पादन बालक जैसा व्यवहार करने लगता है। जब एक विद्यार्थी स्वयं के बारे में यह सोचने लगता है। कि वह निम्न निष्पादन बालक है तब वह सामान्यतः कक्षा में पिछड़ जाता है तथा उसकी स्कूल के प्रति अभिवृत्ति प्रतिकूल हो जाती है। एक विद्यार्थी की अपने विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति उसके शैक्षिक समायोजन और अषैक्षिक समायोजन दोनों पर प्रभाव डालती है। स्कूल और कॉलेज में होने वाली अतिरिक्त पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में विद्यार्थी के भाग लेने से उसके माता–पिता, अध्यापक और मित्र उसके शैक्षिक समायोजन के बारे में निर्णय ले लेते है प्रायः यह अनुभव किया जाता है।

वर्तमान युग नियोजन का युग है। भारत सरकार ने विकास की गति को तीव्र करने के लिये पंचवर्षीय योजनाओं का निर्माण किया है, लेकिन इन योजनाओं के द्वारा संख्यात्मक विकास हुआ है गुणात्मक नहीं। षिक्षा के नियोजन में षिक्षकों के भाग लिये बिना प्रगति होना असम्भव है। शैक्षिक गुणात्मक कार्यक्रम की सफलता विषेषरूपेण षिक्षकों की कार्य दक्षता, उनका त्याग, छात्रों के प्रति तादात्म्य एवं सही देखभाल पर ही निर्भर करती है। इसलिये सर्वप्रथम षिक्षकों को छात्र एवं कक्षा से सम्बन्धित अनेकों परिस्थितियों को ध्यान में रखकर विद्यार्थियों को उचित दिषा प्रदान करनी चाहिये। इस प्रकार षिक्षकों के मार्गदर्षन के लिये इस विषय पर आज गहन शोध की आवष्यकता है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. विद्यार्थियों की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति ज्ञात करना।
2. विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पादन का अध्ययन करना।
3. उच्च (अनुकूल) एवं निम्न (प्रतिकूल) विद्यालयी अभिवृत्ति वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पादन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनायें :

1. छात्र–छात्राओं की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. छात्र–छात्राओं के शैक्षिक निष्पादन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
3. उच्च विद्यालीय अभिवृत्ति तथा निम्न विद्यालयी अभिवृत्ति प्राप्त विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पादन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

www.ignited.in

सीमायें :

समय व श्रम सीमा को देखते हुए प्रस्तुत अध्ययन मथुरा जिले के माध्यमिक स्तर के कक्षा बारह के 200 विद्यार्थियों तक सीमित किया गया है। अध्ययन हेतु लिये गये विद्यालय अनुदानित है।

अध्ययन का प्रारूप

(1) अनुसंधान विधि :

अनुसंधानात्मक विधि के प्रदत्तों को एकत्रित करने के लिये सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है। न्यादर्ष हेतु मथुरा जिले के स्कूल के प्रति अभिवृत्ति वाले 200 विद्यार्थियों को यादृच्छिक विधि द्वारा चुना गया है।

(2) अध्ययन उपकरण :

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के स्कूल अभिवृत्ति परीक्षण डॉ. डी. गोपाल राय द्वारा निर्मित है।

शैक्षिक निष्पादन हेतु विद्यार्थियों के कक्षा ग्यारह की वार्षिक परीक्षा के अंकों को लिया गया है।

(3) प्रदत्तों का सांख्यिकीय विष्लेषण

परिकल्पनाओं और प्रदत्तों की विष्वसनीयता को जानने के लिये मध्यमान, प्रमाप विचलन, तथा टी परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन की प्रक्रिया :

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्त संकलन हेतु कक्षा बारह के विद्यार्थियों को मथुरा जिले के विभिन्न स्कूलों से यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित कर उन पर **'विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति परीक्षण'** प्रषासित किया गया। साथ ही चयनित विद्यार्थियों की कक्षा ग्यारह के वार्षिक परीक्षा के अंकों को उनकी शैक्षिक उपलब्धि हेतु लिया गया तथा उपरोक्त प्राप्त आंकडों का विष्लेषण कर परिणाम प्राप्त किये गये।

परिणाम

(1) छात्र एवं छात्राओं की विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात लिंग का विद्यालय के प्रति अभिवृति पर कोई विषेष प्रभाव नहीं पडता है। देखें तालिका संख्या (1) से (3) तक

तालिका संख्या –1

छात्र एवं छात्राओं की स्कूल के प्रति "अभिवृत्ति" की टी–मूल्य तालिका

लिंग	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी. मूल्य	टिप्पणी
छात्र	100	113.6	12.67	.485	.05 स्तर पर
छात्रायें	100	114.5	13.53		सार्थकता नहीं है।

उपरोक्त तालिका संख्या –1 का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि छात्र और छात्राओं की स्कूल के प्रति अभिवृत्ति (.05 सार्थकता के स्तर पर) में सार्थकता नहीं पायी गयी। अतः शून्य परिकल्पना "छात्र एवं छात्राओं की स्कूल के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।" स्वीकृत की जाती है।

(2) छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति में, सार्थक अन्तर पाया गया। छात्राओं का मध्यमान छात्रों के मध्यमान से बहुत अधिक और वास्तविक है।

तालिका संख्या –2

छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक निष्पादन की टी–मूल्य तालिका

क्षेत्र	लिंग	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी. मूल्य	टिप्पणी
शैक्षिक	छात्र	100	49.55	6.79	4.91	.01 स्तर
निष्पादन	छात्रायें	100	54.15	6.45		पर सार्थक

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक निष्पादन के मध्यमान में, छात्राओं का मध्यमान 54.15, छात्रों के मध्यमान 49.55 से ज्यादा है। इस प्रकार छात्राओं का मध्यमान छात्रों के मध्यमान से बहुत अधिक है और वास्तविक है। जो कि .01 सार्थकता के स्तर पर सार्थक पाया गया है। अतः शून्य परिकल्पना "छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक निष्पादन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।" अस्वीकृत की जाती है।

(3) उच्च एवं निम्न विद्यालीय अभिवृत्ति प्राप्त विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पादन में सार्थक अन्तर पाया गया है। स्पष्ट है कि विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति का प्रभाव बालक की शैक्षिक निष्पादन पर सार्थक रूप से पड़ता है।

तालिका संख्या–3

माध्यमिक स्तर की विद्यालीय अभिवृत्ति प्राप्त एवं निम्न विद्यालीय अभिवृत्ति प्राप्त विद्यार्थियों के "शैक्षिक निष्पादन " की टी– मूल्य तालिका :

क्षेत्र	वर्ग	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी. मूल्य	टिप्पणी
शैक्षिक निष्पादन	उच्च विद्यालयी अभिवृत्ति प्राप्त छात्र	27	53.72	6.76	7.73	.01 स्तर पर सार्थक
	निम्न विद्यालयी अभिवृत्ति प्राप्त छात्रायें	29	51.02	7.13		

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर की विद्यालीय अभिवृत्ति एवं निम्न विद्यालीय अभिवृत्ति प्राप्त विद्यार्थियों की "षैक्षिक निष्पादन में माध्यमिक स्तर के विद्यालीय अभिवृत्ति प्राप्त विद्यार्थियों की "षैक्षिक निष्पादन" का मध्यमान 53.72 निम्न विद्यालीय अभिवृत्ति प्राप्त विद्यार्थियों की "शैक्षिक निष्पादन " के मध्यमान 51.02 से ज्यादा है जो न्यादर्ष की त्रुटि के कारण निष्पादन" न होकर वास्तविक है तथा 01 सार्थकता स्तर पर सार्थक पाया गया है। अतः हम कह सकते है कि शून्य परिकल्पना "उच्च एवं निम्न विद्यालीय अभिवृत्ति प्राप्त विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पादन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।"

www.ignited.in

अस्वीकृत की जाती है। अर्थात् उच्च एवं निम्न विद्यालीय अभिवृत्ति प्राप्त विद्यार्थियों की ''षैक्षिक निष्पादन'' में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

उपलब्धियों के आधार पर सुझाव :

अध्ययन द्वारा प्राप्त परिणाम अनेक समस्याओं को हल करने में मदद करते है जो हमारी षिक्षा नीतियों को भी प्रभावित करते है इन परिणामों के माध्यम् से ही षिक्षा तकनीकी एवं प्रविधियों में सुधार कर षिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाया जा सकता है और बालकों के स्तर को भी उन्नत किया जा सकता है।

प्रस्तुत अध्ययन द्वारा प्राप्त परिणामों के आधार पर भविष्य में शोध कार्य के लिये निम्न सुझाव प्रस्तुत किये जा रहे है–

1. माता–पिता व परिवार के अन्य सदस्यों को चाहिये कि वह प्रारम्भ से ही बालक में स्कूल के प्रति रूचि पैदा करें तथा उसकी अभिरूचि के अनुसार उसे पढ़ने व खेलने दें।

2. माता–पिता व परिवार के अन्य सदस्यों को चाहिये कि वे बालक के गलत व्यवहार पर, उसके कोमल मन में स्कूल का डर न बैठायें जैसेकि–अमुक अध्यापक से षिकायत करेंगे।

3. माता–पिता परिवार के अन्य सदस्यों व अध्यापकों को चाहिये कि वह बालक के व्यवहार एवं गतिविधियों पर नजर रखें तथ उसे अच्छे एवं सृजनात्मक कार्यो की ओर प्रेरित करें। अगर बालक कोई गलत कार्य या असहायोगात्मक व्यवहार कर रहा है तो उसे प्यार से समझायें एवं उसकी गलत धारणाओं का खण्डन करें।

4. अध्यापकों को बालक के मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर गृह–कार्य देना चाहिये। क्योंकि कभी–कभी गृह कार्य पूरा न होने पर विद्यार्थी स्कूल के प्रति प्रतिकूल अभिवृत्ति बना लेता है।

5. अध्यापकों को विद्यार्थी को किसी भी दषा में कक्षा कक्ष में अन्य विद्यार्थियों के सामने दण्डित नहीं करना चाहिये वरन् उसे अकेले अपने कक्ष में बुलाकर पूरी स्थिति से अवगत कराकर सावधान करना चाहिये।

6. विद्यालयों में विद्यार्थियों के लिये अतिरिक्त पाठ्य सहगामी क्रियायें समय–समय पर आयोजित की जानी चाहिये तथा सभी विद्यार्थियों को समान रूप से भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिये। इससे उन विद्यार्थियों में स्कूल के प्रति अनुकूल अभिवृत्ति पैदा होगी जो पढ़ने में पिछड़े हुये है।

7. अध्यापकों को चाहिये ि कवह कमजोर विद्यार्थियों पर विषेष नजर रखें तथा उनकी कमजोरियों को ज्ञात कर उन्हें विषेष कक्षा लेकर दूर करें तथा उन्हें विद्यालय एवं शिक्षा के प्रति प्रेरित करते रहें।

सन्दर्भ सूची

1. Bhagia, S.M. "Study of the Problem of school adjustment Ph.D. Education Maharaja Sayaji Rao Univ. of Baroda, 1986.

2. Boring, E.G. Longefield Weld, H.S., "Foundation of Psychology" Willy, New York, 1948, Page 151.

3. Clanders, "Changers in Pupil attitudes during school" 1964. In Lindgren, Henry Clay, Lindgren, Fred rick (eds.). Current Readings in Educational Psychology (Ind. edn.) John Wily and Sons inc. New York 1971.

4. Jackson, P.W. teachers "Prescription of Pupils" attitude towards school, In Morrison, A Meentyre D. (eds.). The Social psychology of Teaching, Middle Sex; Penguin Edition, 1975.

5. Kanawala, s., "Adjustment problems of College Students" Journal of Education and Psychology".

6. Louis, Vernal, "Student Attitude towards the school" Journal of Indian Education Review, Vol. XIV, No. 4., Oct. 1974. PP. 1-12.

******